eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' में दलित बाल–जीवन का समीक्षात्मक अनुशीलन

[1]डॉ0 शार्दूल विक्रम सिंह

[1] एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी0जी0 कॉलेज, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

हिन्दी दलित साहित्य के आधार स्तम्भों में श्यौराज सिंह बेचैन का नाम अग्रिम पंक्ति में रखा जाता है। इन्होंने नब्बे के दशक में लिखना शुरू किया । एक दलित परिवार में जन्में बेचैन जी को अपने शुरूआती जीवन में जो सामाजिक, आर्थिक, मानसिक कष्ट झेलने पड़े, उस वेदना, पीड़ा, टीस की मुखर अभिव्यक्ति उनके सम्पूर्ण दलित वर्ग में वे चर्चित एवं स्थापित हुए 2009 में प्रकाशित अपनी आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' से। बेचैन जी की इस आत्मकथा में सम्पूर्ण दलित वर्ग की पीड़ा, वेदना, कसक, उत्पीड़न, शोषण तथा सवर्ण जाति के द्वारा किए गए अनेक अत्याचारों की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। जिसका अनुभव उन्होंने अपने बाल–जीवन में महसूस किया तथा बेचैन जी ने दलित वर्ग पर हो रहे अत्याचारों, शोषणों एवं उत्पीड़न का यथार्थ आंकलन करके उनमें चेतना का संचार किया तथा उनकी कलम से निकला दलित साहित्य वर्तमान समय में दलितों को जाग्रत करके उन्हें समरूपता का संदेश दिया।

Key words:- श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर', दलित बाल–जीवन, दलित वर्ग की पीड़ा, वेदना, कसक, उत्पीड़न, शोषण समीक्षात्मक अनुशीलन।

INTRODUCTION

हिन्दी दलित साहित्यकारों में श्यौराज सिंह बेचैन जी का नाम किसी परिचय का मोहताज नही है। इनके द्वारा लिखी हुई प्रसिद्ध आत्मकथा **'मेरा बचपन मेरे कंधों पर'** हिन्दी ही नही, बल्कि समूचे भारतीय साहित्य की आत्मकथाओं के बीच एक दहकता दस्तावेज है। जिसमें बेचैन जी ने अपने जीवनानुभवों के आधार पर दलित समाज एवं दलित जीवन का वृहद वर्णन किया है। यह आत्मकथा जातिगत उत्पीड़न और अतिदलित समाज का आख्यान है। जिसमें अतीत से जुड़ी घटनाएं एवं पीड़ादायी अनुभवों से जुड़ी कराह है, जिसमें लेखक ही नही बल्कि समाज और समय भी उपस्थित है– भोगी हुई यातना एवं भयावहता के साथ।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

हिन्दी दलित साहित्य ने अपने लगभग चार दशक के इतिहास में आवाज काफी बुलंद कर ली है और अपनी उपस्थिति का समूचे साहित्य जगत न केवल अपने देश अपितु अन्य अनेक देशों में परिचय दिया है। लेकिन हिन्दी दलित साहित्य में सर्वाधिक प्रसिद्ध दलित आत्मकथाओं को मिली है। दलित आत्मकथाओं की इस कड़ी में श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा मेरा बचपन मेरे कंधों पर है। बेचैन जी की यह आत्मकथा हमारे मन–मस्तिष्क को बड़ी गंभीरता से तह तक झकझोरती है। इसमें लेखक की 5 वर्ष की आयु से लेकर हाईस्कूल तक की दुर्दशापूर्ण बाल्यावस्था का मर्मस्पर्शी वर्ण है। इस आत्मकथा में बचपन में एक दलित बालक कदम–कदम पर किस प्रकार का जातीय अपमान और प्रताड़नाओं के शिकार होता है, उसका हमें इसमें हर जगह वर्णन मिलता है।

हमारे सम्पूर्ण जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव बचपन होता है। हर किसी को अपना बचपन याद आता है। हम सबने अपने बचपन को जीया है। शायद ही कोई ऐसा है कि उनका बाल–जीवन हम देखे तो लगता है कि उनका बाल–जीवन अनेक प्रकार के संघर्षों से भरा हुआ है। उन पर बचपन से ही जाति और छुआछूत के संस्कारों की असंख्य चोटे की है तथा परिवार की आर्थिक दशा दयनीय होने के कारण कुपोषण, अशिक्षा कपड़ें एवं मनोरंजन आदि की वस्तुओं को देखकर बच्चों को हमेशा मन मानकर रहना पड़ा है। कुछ ऐसा ही बचपन दलित बालक श्यौराज (सौराज) बचपन का नाम है जिसने पांच (5) वर्ष की आयु से ही अपना पेट भरने के लिए संघर्ष करना शुरू कर दिया है।

बेचैन जी की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' बालक सौराज के बाल–संघर्ष का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। जिसमें उन्होंने अपने बचपन में खेली हुई सम्पूर्ण यातनाओं को वर्णित किया है। अपने पिता जी की मौत से लेकर दसवीं तक पढ़ते हुए उन्होंने अपने बाल–जीवन में यह सब कुछ भोगा, जो एक दलित वर्ग का बच्चा आज तक झेलता आया है। बाल–संघर्ष का कोई भी ऐसा रूप नही है, जो इस आत्मकथा में न अभिव्यक्त हुआ हो। कही जातीय–प्रताड़ना उनके साथ है, कहीं घर की आर्थिक स्थिति, कहीं पारंपरिक घृणास्पद कामकाज एवं खान–पान तो कहीं समाज में प्रचलित बुरे रीति–रिवाज। इन सारे विकारों ने मिलकर बालक सौराज से उनके बचपन की खुशियाँ छीनने में कहीं कसर नही छोड़ी है और गंभीर कष्टों से दो–चार होने को बाध्य किया है।

इस आत्मकथा में लेखक को जहाँ एक ओर बचपन से ही वर्णव्यवस्था का अहसास कराया गया, वहीं दूसरी ओर लगातार उनके श्रम का शोषण किया गया। बाल–संघर्ष संबंध में उनका यह कथन दृष्टव्य है, – **''जब से होश संभाला तब से आज तक मुझे चाहे बहन का घर हो, या सौतेले**

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

बाप का घर हो, अपने पूर्वजों का गाँव या दिल्ली में मौसी का घर अथवा कानपुर (नैनीताल) वगेरह में किए गए तरह–तरह के काम, मैंने काम करके ही रोटी खाई और इतनी कीमतें चुकाई है कि समाज मेरे बाल–श्रम का भुगतान कर दें तो मैं आज से ही शेष जीवन वगैर कमाए खाने का हकदार हूँ.....''

आज भी हमारे देश में लाखों –करोड़ों बाल–मजदूर अपना, बचपन, अपने ही कंधों पर ढो रहे है, परन्तु उनमें से अधिकांश बचपन में कुपोषण और भुखमरी का शिकार होकर अपने जीवन में हार मान लेते है। लेकिन इस आत्मकथा में लेखक बार–बार हारकर भी अपने जीवन– संग्राम में विजयी होते है। बेचैन जी ने अपने बाल–जीवन के दर्द को कुछ इस तरह बयाँ करते है, **''दशक–दशक बीत रहे है। जिंदगी चलती जा रही है। लेकिन बीते दिन मैं भूल नही पा रहा हूँ.....**

'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' आत्मकथा में उपस्थित बालमन की इस तरह की पीड़ा से तिलमिला के समकालीन कवि राजेश जोशी व्यवस्था से सवाल करते हैः– **''बच्चे काम पर जा रहे है,**

हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह, भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना

लिखा जाना चाहिए सवाल की तरह, काम पर क्यों जा रहे है बच्चे?''

निष्कर्षतः हम यह कह सकते है कि श्यौराज सिंह बेचैन द्वारा लिखित आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' उनके बाल–श्रम शोषण तथा जीवन संघर्ष की बेवाक अभिव्यक्ति है। उनके बचपन में अथाह दुःख, दर्द, पीड़ा, यातना, अन्याय, अत्याचार और अभाव , तिरस्कार सब कुछ होने के बावजूद भी उनके मन में मायूसी और निराशा न के बराबर है। यह आत्मकथा दलितों को ही नहीं बल्कि हम सबको प्रेरणा देती है। यहाँ तक सभी बच्चों के लिए यह आत्मकथा प्रेरणा का प्रकाश स्तम्भ है, जो कभी अपने जीवन में हार को नही स्वीकारते है और हमेशा जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ते जाते है। ये ही बच्चे हमारे देश का भविष्य है।

संदर्भ सूची–

1) मेरा बचपन मेरे कंधो पर, श्यौराज सिंह बेचैन, पृ0– 33

2) बच्चे काम पर जा रहे है, कविता, राजेश जोशी पृ0– 58

3) दलित साहित्य के प्रतिमान, डॉ0 एन0सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।